IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
Impact Factor: 5.731
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 6, Issue 5, May 2026

हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा और उसका विकास

प्रेमा थुवाल[1] and डॉ. रियासत अली[2]

[1]शोधार्थी, विभाग हिंदी

[2]शोध निर्देशक, विभाग हिंदी

माइंड पावर विश्वविद्यालय, भीमताल, नैनीताल

सारांश

हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद एक महत्वपूर्ण वैचारिक धारा के रूप में विकसित हुआ है। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक सुधार, भाषाई एकता और राष्ट्रीय अस्मिता के संरक्षण का भी माध्यम बना। हिंदी साहित्य ने विभिन्न कालखंडों में राष्ट्रवादी विचारों को अभिव्यक्त करते हुए भारतीय समाज को जागृत करने और स्वतंत्रता आंदोलन को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा, उसके ऐतिहासिक विकास तथा प्रमुख साहित्यकारों के योगदान का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द: राष्ट्रवाद, हिंदी साहित्य, राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता आंदोलन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।

प्रस्तावना

राष्ट्रवाद आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सांस्कृतिक अवधारणा है। राष्ट्रवाद का मूल भाव किसी राष्ट्र के प्रति प्रेम, निष्ठा, गौरव और उसके विकास के लिए समर्पण में निहित है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में राष्ट्रवाद की भावना का विकास साहित्य के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हुआ। हिंदी साहित्य ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण और प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाई। साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से जनता में स्वाधीनता, आत्मसम्मान और राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत किया।

राष्ट्रवाद की अवधारणा

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

'राष्ट्रवाद' शब्द 'राष्ट्र' से निर्मित है। राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं का समूह नहीं है, बल्कि समान इतिहास, संस्कृति, परंपराओं, भाषा और सामूहिक चेतना से निर्मित एक सामाजिक-सांस्कृतिक इकाई है। राष्ट्रवाद उस भावना को व्यक्त करता है जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने राष्ट्र के हितों को सर्वोपरि मानता है तथा उसके संरक्षण और विकास के लिए कार्य करता है।

भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवाद की अवधारणा पश्चिमी राष्ट्रवाद से कुछ भिन्न रही है। यहाँ राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का आंदोलन नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक सुधार और आध्यात्मिक मूल्यों से भी जुड़ा हुआ था।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद का विकास

1. आदिकाल और भक्तिकाल में राष्ट्रीय चेतना के बीज

यद्यपि आदिकाल में आधुनिक राष्ट्रवाद की अवधारणा विकसित नहीं हुई थी, फिर भी वीरगाथा साहित्य में मातृभूमि और राज्य की रक्षा के लिए समर्पण की भावना दिखाई देती है। वीर रस के कवियों ने शौर्य और स्वाभिमान को महत्व दिया।

भक्तिकाल में कबीर, तुलसीदास, सूरदास आदि संत कवियों ने सामाजिक समरसता और मानव एकता का संदेश दिया। इनकी रचनाओं ने जातिगत एवं धार्मिक विभाजनों को कम करने का प्रयास किया, जो आगे चलकर राष्ट्रीय एकता के आधार बने।

2. भारतेंदु युग में राष्ट्रवाद

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हिंदी साहित्य में आधुनिक राष्ट्रीय चेतना का प्रारंभ हुआ। इस काल को हिंदी नवजागरण का युग कहा जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने साहित्य को राष्ट्रीय जागरण का माध्यम बनाया।

उनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ—

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"

भाषा, संस्कृति और स्वदेश प्रेम के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने का प्रयास करती हैं। भारतेंदु ने अंग्रेजी शासन की आर्थिक और सामाजिक नीतियों की आलोचना करते हुए जनता को जागृत किया।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

3. द्विवेदी युग और राष्ट्रवादी साहित्य

महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता का स्वर और अधिक स्पष्ट हुआ। इस काल के साहित्यकारों ने सामाजिक सुधार, शिक्षा, स्वदेशी और राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित किया।

मैथिलीशरण गुप्त का योगदान

मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि कहा जाता है। उनकी कृति भारत-भारती भारतीय राष्ट्रीय चेतना का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उन्होंने भारतीय इतिहास, संस्कृति और गौरवशाली परंपराओं का चित्रण करते हुए जनता को राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित किया।

4. छायावाद और राष्ट्रवाद

छायावाद मुख्यतः भावनात्मक और व्यक्तिगत अनुभूतियों का साहित्य माना जाता है, किंतु इसके कवियों ने भी राष्ट्रीय चेतना को स्वर प्रदान किया।

जयशंकर प्रसाद

प्रसाद ने अपने नाटकों और कविताओं में भारतीय इतिहास और गौरव का चित्रण किया। उनके साहित्य में राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना स्पष्ट दिखाई देती है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

निराला की कविताओं में सामाजिक अन्याय के विरोध के साथ-साथ राष्ट्रीय जागरण का स्वर भी मिलता है।

सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा

इन कवियों ने मानवतावाद और सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से राष्ट्रवाद को व्यापक दृष्टि प्रदान की।

5. स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रवादी साहित्य

बीसवीं शताब्दी में हिंदी साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन का सशक्त माध्यम बना। अनेक कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं से जनमानस में स्वतंत्रता की चेतना जगाई।

माखनलाल चतुर्वेदी

उनकी प्रसिद्ध कविता पुष्प की अभिलाषा राष्ट्रप्रेम और बलिदान की भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है।

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,

उस पथ पर देना तुम फेंक,

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 6, Issue 5, May 2026
Impact Factor: 5.731

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।"
सुभद्रा कुमारी चौहान
उनकी कविता झाँसी की रानी ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों में वीरता और देशभक्ति का संचार किया।
रामधारी सिंह 'दिनकर'
दिनकर के साहित्य में ओज, राष्ट्रीय स्वाभिमान और क्रांतिकारी चेतना का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्हें आधुनिक युग का राष्ट्रकवि भी कहा जाता है।

6. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रवाद

स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद की अवधारणा में परिवर्तन आया। अब साहित्यकारों का ध्यान राष्ट्र निर्माण, सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और विकास की समस्याओं की ओर गया।
इस काल में राष्ट्रवाद का स्वर केवल विदेशी शासन के विरोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि गरीबी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियों के समाधान से जुड़ गया।
समकालीन हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद
वर्तमान समय में राष्ट्रवाद बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुका है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सांस्कृतिक परिवर्तनों के बीच हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद की नई व्याख्याएँ सामने आई हैं। समकालीन साहित्यकार राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक विविधता, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक समावेशन को राष्ट्रवाद के आवश्यक तत्व मानते हैं।
आज का राष्ट्रवाद केवल सीमाओं की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण से भी जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा का विकास एक सतत प्रक्रिया रही है। आदिकालीन वीरता से लेकर आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों तक राष्ट्रवाद ने विभिन्न रूपों में साहित्य को प्रभावित किया है। भारतेंदु युग से आरंभ हुई राष्ट्रीय चेतना द्विवेदी युग, छायावाद और स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अपने उत्कर्ष पर पहुँची। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रवाद का स्वर राष्ट्र निर्माण और सामाजिक विकास की ओर उन्मुख हुआ।

हिंदी साहित्य ने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक विचारधारा के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य भारतीय राष्ट्रवाद की आत्मा और उसके विकास का सशक्त दस्तावेज माना जाता है।

संदर्भ सूची

1. दिनकर, रा. सि. (2019). संस्कृति के चार अध्याय. लोकभारती प्रकाशन।
2. गुप्त, मै. श. (2018). भारत-भारती. साहित्य सदन।
3. शुक्ल, रा. च. (2020). हिंदी साहित्य का इतिहास. लोकभारती प्रकाशन।
4. शर्मा, रा. वि. (2015). भारतीय साहित्य और हिंदी जाति की अवधारणा. वाणी प्रकाशन।
5. शर्मा, रा. वि. (2017). भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद (खंड 1). राजकमल प्रकाशन।
6. द्विवेदी, म. प्र. (2016). महावीर प्रसाद द्विवेदी रचनावली (खंड 3). हिंदी साहित्य सम्मेलन।
7. चतुर्वेदी, म. ला. (2018). हिमकिरीटिनी. भारतीय ज्ञानपीठ।
8. चौहान, सु. कु. (2019). मुकुल. लोकभारती प्रकाशन।
9. प्रसाद, ज. श. (2018). कामायनी. राजपाल एंड संस।
10. निराला, सू. का. त्रि. (2017). निराला रचनावली (खंड 2). राजकमल प्रकाशन।
11. पंत, सु. कु. (2016). युगवाणी. भारतीय ज्ञानपीठ।
12. वर्मा, म. दे. (2018). श्रृंखला की कड़ियाँ. लोकभारती प्रकाशन।
13. मिश्र, वि. नि. (2014). भारतीयता की पहचान. प्रभात प्रकाशन।
14. नागर, अ. (2015). राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य. वाणी प्रकाशन।
15. सिंह, नामवर. (2016). इतिहास और आलोचना. राजकमल प्रकाशन।
16. सिंह, बच्चन. (2012). हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन।
17. पांडेय, मैनेजर. (2011). साहित्य और इतिहास दृष्टि. वाणी प्रकाशन।
18. तिवारी, रामचंद्र. (2017). हिंदी का गद्य साहित्य और राष्ट्रीय चेतना. विश्वविद्यालय प्रकाशन।
19. सिंह, विजय बहादुर. (2013). राष्ट्रवाद और हिंदी साहित्य. किताबघर प्रकाशन।
20. अग्रवाल, पुरुषोत्तम. (2014). संस्कृति, वर्चस्व और प्रतिरोध. राजकमल प्रकाशन।